तॅहक़ीक़ व तख़रीजे हदीष

يا علی رضی الله عنه ! أنت أخی فی الدنیا والآخرة

(ऐ अ़ली رضی الله عنه ! तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो)

मुरत्तिब

ख़ुशरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी

डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन (अह्ले सुन्नत)

तॅह्क़ीक़ व तख़रीजे हदीष

يا علی رضی اللہ عنہ ! أنت أخی فی الدنيا والآخرة

(ऐ अ़ली رضی اللہ عنہ ! तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो)

मुरत्तिब

ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी

डॉ. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाशिर :

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन
(अहले सुन्नत)

किताब का नाम : तॅह्क़ीक़ व तख़रीजे हदीष

يا عليؑ ! أنت أخی فی الدنیا والآخرة

(ऐ अ़ली ؑ ! तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो)

मुरत्तिब : ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी : डॉ. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

फाउन्डर एन्ड चेरमेन

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

सफहात : 40

सन इशाअत : मार्च, 2019 (13 रजब, हिजरी 1440)

कम्पोसिंग/प्रिंटिंग : ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

(अहले सुन्नत)

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

डो. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

Contact No : 85110 21786

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ﷻ के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल है । अल्लाह ﷻ का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुज़ से **"तॅहक़ीक़ व तख़रीजे हदीष يا عليّ ! أنت أخى فى الدنيا والآخرة (ऐ अ़ली ؑ ! तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो)"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया ।

एक अैसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने मुहिब्बाने अहले बैते अत्हार ؑ और ख़ास तोर पर बनू फातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो । ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद ﷺ को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरों पर उलमा को आले मुहम्मद ﷺ को बुरे अल्फाज़ों से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सज़ाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा ؒ को इमाम नफ्सुज़्ज़किय्या ؓ की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफिई ؒ पर शिआ़, राफ़ज़ी के फतवें लगा कर उन्हें ज़लील किया गया, कहीं इमाम निसाई ؒ को मौला अ़ली ؑ की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाक़िम ؒ जैसे मुहद्दिष पर शिआ़ के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया । एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अहले बैत ؑ के ग़ुलाम कभी अम्मार बिन यासिर ؓ बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र ؓ की तरह रीज़ाए इलाही में शहीद हुए । कहीं हबीब इब्न मुजाहिर ؓ और हुर्र ؓ बनकर करबला में आले मुहम्मद ﷺ पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई ؒ, इमाम हाक़िम ؒ, इमाम बुख़ारी ؒ, इमाम अबू हनीफा ؒ, इमाम

शाफीई और इमाम अहमद इब्ने हम्बल बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख्वाजा गरीब नवाज़, निज़ामुद्दीन औलिया, वारिसे पाक, मख़्दुम महाइमी और मख़्दुम जलालुद्दीन जहानियां जहाँगश्त बनकर आए। वक़्तन फ-वक़्तन हर मैदान में ग़ुलामानें अहले बैत नासबिय्यतो ख़ारजिय्यत के मुक़ाबले में आते रहें, अपनी ख़िदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे।

इस ज़माने में भी नासबिय्यत और ख़ारजियत तमाम फिर्क़ों में अपना सर उठा रही है बल्कि कहूँगा कि उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क़ सिर्फ इतना है कि जो नासबिय्यत की ड़ोर कल सल्तनत के बादशाहों ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमाओ मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रखकर लोगों से फज़ाइले अहले बैत छुपा कर, बुग्ज़े अहले बैत को आम करवा रहे थे वो ही नासबिय्यत की बागड़ोर आज कल कुछ फिर्क़ापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्ज़ीमों नें संभाल ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जानो माल के डर से फज़ाइले अहले बैत छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घड़नी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क़ सिर्फ इतना है कि आज के इस Democracy (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या मालो औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमा'अत फज़ाइले अहले बैत नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आनो अहले बैत से दूर किया जा रहा है। कुर्आन के तर्जुमा व तफ़सीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अहले बैत पर शिआ़, राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह का क़ौल साबित है कि नबीय्ये करीम ने फ़रमाया :

"मैं जिसका मौला हूँ अ़ली भी उसके मौला हैं"

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी)(रावी सिक्का)

मुख़्तसर हदीस :

"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं क़ुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढ़कर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अहले बैत ؑ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपस में जुदा नहीं होंगे ता-आँ कि हौज़ पर आकर मुझ से मिले ।"

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؑ)

अब आप कारेइन को सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमें कुर्आन और अहले बैत ؑ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीरो उलमा और कुछ तन्ज़ीमों की एक जमा'अत फिर्कापरस्ती फैला कर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है । आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अहले बैत ؑ से मुहब्बत करे उसे शिआ़, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अहले बैत ؑ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें ला'नो ता'न करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है । मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को तवील नहीं करना चाहता जो हक़ था वो बयान करने की कोशिश की है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

अल्लाह ﷻ से दुआ है कि मेरी इस हक़ीर सी काविश को क़ुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह ﷺ व अहले बैत ؑ की शफाअत नसीब फरमाए !

ख़ादिमे दरे ज़हराए पाक ؑ

डॉ. शेहज़ादहुसैन यासीनमीयां क़ाज़ी

13 रज्जब, हिजरी 1440

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेश लफ़्ज़

इस वक़्त पाकिस्तान में एक दीनी जमाअत ने नया फ़ितना शुरू किया है और रोज़ उस जमाअत के अमीर सय्यिदिना अ़ली عليه السلام की शान व मरतबे को कम करने की कोशिश में कोई न कोई बयान देते हैं। हालांकि जिस के मरतबे को अल्लाह बुलंद कर दे बंदे की क्या औक़ात है कि उसे पस्त कर सके, इसी सिलसिले में उन्हों ने एक बयान में कहा कि हम सय्यिदिना अ़ली رضي الله عنه को रसूलुल्लाह ﷺ का भाई नहीं कह सकते ।

सय्यिदिना अ़ली बिन अबी तालिब عليه السلام का मक़ाम व मर्तबा और उन की अजमत व फ़ज़ीलत एक तस्लीम शुदा हक़ीक़त है। उलमाए अहले सुन्नत के यहाँ यह मसअला ग़ैर मुतनाज़ेआ रहा है। लेकिन हद दर्जा अफसोस की बात है कि इधर नासबियत के ज़ेरे असर बाज़ लोग दफ़ाए सहाबा और दफ़ाए सुन्नत के नाम से ऐसी दिल आज़ार तहरीरें शाया कर रहे हैं जो अहले बैत की अज़मत और उन के तक़द्दुस के मनाफ़ी है। यह लोग बतौरे ख़ास सय्यिदिना अ़ली عليه السلام को बाज़ ख़ुद तराशीदा वाक़यात के हवाले से इनकी शख़्सियत को निशानाए तनकीद व तनक़ीस बनाते हैं। जब कि उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि उलमाए अहले सुन्नत के नज़दीक मो’तबर कुतुबे अहादीस, कुतुबे तफ़ासीर, और कुतुबे सीरत व तराजिम में सय्यिदिना अ़ली عليه السلام के मक़ाम ओ मरतबे को बहुत तफसील से वाज़ेह किया गया है।

इसी सिलसिले की वह हदीष भी है जिस की तफ़सीली तख़रीज़ का शर्फ़ आज हम हासिल कर रहे हैं। इस के मो’तबर हवालों से अंदाज़ा किया जा सकता है कि सय्यिदिना अ़ली عليه السلام की हक़ीक़ी तस्वीर और अल्लाह के रसूल ﷺ की नज़रों में उन का मक़ाम क्या है और यह ना आक़ेबत अंदेश लोग उन्हें किस अंदाज़ में पेश करके अपनी आक़ेबत ख़राब कर रहे हैं।

اللهم أرنا الحق حقاً وارزقنا اتباعه وأرنا الباطل باطلاً وارزقنا اجتنابه.

तालिबे शफ़ाअत ए रसूल ﷺ

ख़ुसरो क़ासिम

असिस्टेंट प्रोफेसर

मेकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेन्ट

ए एम यू, अ़लीगढ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قوله صلى الله عليه وسلم لعلى :
أنت أخى فى الدنيا والآخرة :

(۱) روى الحاكم فى المستدرک بسنده عن ابن عمر قال: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم، آخى بين أصحابه، فآخى بين أبى بكر وعمر، وبين طلحة والزبير، وبين عثمان بن عفان وعبد الرحمن بن عوف فقال على عليه السلام: يا رسول الله، إنک قد آخيت بين أصحابک، فمن أخى؟ قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أما ترضى يا على أن أكون أخاک، قال ابن عمر: وكان على جلدا شجاعا، فقال على: بلى يا رسول الله، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أنت أخى فى الدنيا والآخرة.

तर्जुमा: इमाम हाकिम ने अपनी 'मुस्तदरक' में सैयदना इब्ने उमर से रिवायत बयान की है कि उन्हों ने बयान किया: रसूलुल्लाह ने अपने असहाब के दरमियान रिश्ताए मुवाख़ात कायम किया। अबू बक्र व उमर के दरमियान, तल्हा और ज़ुबैर के दरमियान, उस्मान बिन अफ्फान और अब्दुर रहमान बिन औफ के दरमियान, यह रिश्ता कायम कराया। यह देख कर अ़ली ने अर्ज किया: ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने अपने सहाबा के दरमियान मुवाख़ात करा दी, फिर मेरा भाई कौन है ? यह सुन कर रसूलुल्लाह ने फरमाया : **"ऐ अ़ली! क्या तुम इस बात से ख़ुश नहीं हो कि तुम मेरे भाई हो ?"** इब्ने उमर बयान करते हैं कि अ़ली मजबूत क़द व काठी के बहादुर आदमी थे। नबीए अकरम

ﷺ की बात सुन कर उन्हों ने अर्ज़ किया: "हाँ, क्यूँ नहीं ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ", उन की यह बात सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : **"तुम दुनिया और आख़िरत दोनों जगहों पर मेरे भाई हो ।"** (मुस्तदरक हाकिम : 3/14)

(۲) وأخرج الترمذی عن ابن عمر قال: آخی رسول الله علیه الصلاة والسلام بین أصحابه، فجاء علی تدمع عیناه، فقال: یا رسول الله: آخیت بین أصحابک، ولم تواخ بینی وبین أحد، فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم: أنت أخی فی الدنیا والآخرة.

तर्जुमा: इमाम तिरमिज़ी رحمة الله सय्यिदिना उमर رضي الله عنه से रिवायत करते हैं, उन्हों ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के माबैन जब रिश्ताए मुवाख़ात क़ायम किया तो अ़ली رضي الله عنه रोते हुए आप के पास आए और अर्ज़ किया: आप ने अपने साथियों के दरमियान भाई चारा क़ायम किया लेकिन मेरा किसी से भाई चारा नहीं कराया। यह सुन कर **रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : "तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो ।"**

इस रिवायत को इमाम सुयूती رحمة الله ने "तारीख़ुल ख़ुलफ़ा" (सफ़हा:170) में नक़ल किया है ।

(۳) وروی الحاکم فی المستدرک بسنده عن ابن عباس قال: کان علی یقول فی حیاة رسول الله صلی الله علیه وسلم، إن الله یقول: أفإن مات أو قتل انقلبتم علی أعقابکم، والله لا ننقلب علی أعقابنا، بعد إذ هدانا الله، والله لئن مات أو قتل، لأقاتلن علی ما قاتل علیه حتی أموت، والله إنی لأخوه وولیه، وابن عمه، ووارث علمه، فمن أحق به منی. (المستدرک للحاکم 3/ 126)

तर्जुमा: इमाम हाकिम رحمة الله ने अपनी सनद से इब्ने अब्बास رضي الله عنه से अपनी मुस्तदरक में रिवायत नक़ल की है, वह कहते हैं: नबीए अकरम ﷺ की ज़िंदगी में

अ़ली ﷺ कहा करते थे : अल्लाह ﷻ फरमाता है: **"अगर उन की वफ़ात हो जाए या उन को शहीद कर दिया जाए तो क्या तुम उल्टे पाँव वापस लौट जाओगे, अल्लाह ﷻ की कसम हम उल्टे पाँव वापस लौटने वाले नहीं हैं,** जब कि अल्लाह ﷻ ने हमें इजाज़त दे दी है, अल्लाह ﷻ की क़सम, अगर वह वफ़ात पा जाएँ या शहीद कर दिये जाएँ तो मैं उस मक़सद के लिए जंग करुंगा जिस पर आप ﷺ ने जंग की यहाँ तक कि मैं उस राह पर चलते हुए वफ़ात पा जाऊँ। **अल्लाह ﷻ की क़सम, मैं आप ﷺ का भाई हूँ, आप का वली हूँ, आप के चचा का बेटा हूँ, आप के इल्म का वारिस हूँ, लिहाजा उन की नियाबत का मुझ से ज़ियादा हक़दार कौन हो सकता है।"** इस हदीष को हैसमी ने "मजमाउल ज़वाइद" (9/134) में ज़िक्र कर के लिखा है कि इस को तबरानी ने रिवायत किया है और इस के रजाल सही के रजाल हैं, इस को मुहिब्बए तबरी رحمه الله ने "रियाजुन्नज़िरा" (2/226) में ज़िक्र किया है और कहा है कि इस को अहमद ने "मनाक़िब" में ज़िक्र किया है, निसाई ने "ख़साइस" (सफ़हा:18) में और ज़हबी رحمه الله ने "मीज़ानुल ऐतेदाल" (2/285) में मुख़तसरन इस का ज़िक्र किया है।

(٣) وروى ابن كثير في التفسير: قال أبو القاسم الطبراني: حدثنا علي بن عبد العزيز، حدثنا عمرو بن حماد بن طلحة القناد، حدثنا أسباط بن نصر عن سمك بن حرب عن عكرمة عن ابن عباس: أن عليا كان يقول في حياة رسول الله صلى الله عليه وسلم: ﴿أفإن مات أو قتل انقلبتم على أعقابكم﴾، والله لا ننقلب على أعقابنا بعد إذ هدانا الله، والله لئن مات أو قتل لأقاتلن على ما قاتل عليه، حتى أموت، والله إني لأخوه ووليه وابن عمه ووارثه، فمن أحق به مني.

तर्जुमा: इब्ने कसीर رحمه الله ने अपनी तफ़सीर में रिवायत नक़ल करते हैं कि अबुल क़ासिम तबरानी कहते हैं: हम से बयान किया अ़ली बिन अब्दुल अज़ीज़ ने, वह कहते हैं कि हम से बयान किया अम्र बिन हम्माद बिन तल्हा कनाद ने, वह कहते हैं

कि हम से बयान किया इस्बात बिन नस्र ने, वह रिवायत करते हैं सिमक बिन हर्ब से, वह रिवायत करते हैं अकरिमा से, वह रिवायत करते हैं इब्ने अब्बास ؓ से, वह बयान करते हैं: नबीए अकरम ﷺ की ज़िन्दगी में अ़ली ؓ कहा करते थे: "अल्लाह ﷻ फरमाता है: 'अगर उन की वफ़ात हो जाए या उन को शहीद कर दिया जाए तो क्या तुम उल्टे पाँव वापस लौट जाओगे', अल्लाह की क़सम, हम उल्टे पाँव वापस होने वाले नहीं हैं, जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी है, अल्लाह की क़सम! अगर वह वफ़ात पा जाएँ या शहीद कर दिये जाएँ, तो मैं उस मक़सद के लिए जंग करूंगा जिस पर आप ﷺ ने जंग की, यहाँ तक कि मैं उस राह पर चलते हुए वफ़ात पा जाऊँ। **अल्लाह ﷻ की क़सम! मैं आप ﷺ का भाई हूँ, आप का वली हूँ, आप के चचा का बेटा हूँ, आप के इल्म का वारिस हूँ, लिहाजा उन की नियाबत का मुझ से जियादा हक़दार कौन हो सकता है।"** (तफ़सीर इब्ने कसीर 614/1)

(٥) وروى الإمام أحمد فى الفضائل بسنده عن سماك عن عكرمة عن ابن عباس،أن عليا كان يقول فى حياة رسول الله صلى الله عليه وسلم :إن الله عز وجل يقول:﴿أفإن مات أو قتل انقلبتم على أعقابكم﴾،والله لا ننقلب على أعقابنا،بعد إذ هدانا الله،والله لئن مات أو قتل، لأقاتلن على ما قاتل عليه،حتى أموت والله إني لأخوه ووليه وابن عمه ووارثه،ومن أحق به مني.

तर्जुमा: इमाम अहमद ؒ "फ़ज़ाइल" में अपनी सनद से सिमाक से रिवायत करते हैं, वह रिवायत करते हैं अकरिमा से, वह रिवायत करते हैं इब्ने अब्बास से वह बयान करते हैं: नबीए अकरम ﷺ की ज़िन्दगी में अ़ली ؓ कहा करते थे: "अल्लाह ﷻ फरमाता है : 'अगर उन की वफ़ात हो जाए या उन को शहीद कर दिया जाए तो क्या तुम उल्टे पाँव वापस लौट जाओगे', अल्लाह ﷻ की क़सम, हम उल्टे पाँव वापस होने वाले नहीं हैं, जब कि अल्लाह ﷻ ने हमें हिदायत दे दी है, अल्लाह ﷻ की क़सम! अगर वह वफ़ात पा जाएँ या शहीद कर दिये जाएँ, तो मैं उस

मक़सद के लिए जंग करूंगा जिस पर आप ﷺ ने जंग की, यहाँ तक कि मैं उस राह पर चलते हुए वफ़ात पा जाऊँ। **अल्लाह ﷻ की क़सम ! मैं आप ﷺ का भाई हूँ, आप का वली हूँ, आप के चचा का बेटा हूँ, आप के इल्म का वारिस हूँ, लिहाजा उन की नियाबत का मुझ से जियादा हक़दार कौन हो सकता है।"**

(फ़ज़ाइलुस्सहाबा इमाम इब्ने हम्बल رحمه الله (2/652-653)

(٢) وروى الحاكم فى المستدرك بسنده عن أسماء بنت عميس قالت : كنت فى زفاف فاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم ، فلما أصبحنا جاء النبى صلى الله عليه وسلم،فقال:يا أم أيمن،إدعى لى أخى، فقالت:هو أخوك وتنكحه ؟ قال:نعم يا أم أيمن،فجاء على عليه السلام ، فنضح النبى صلى الله عليه وسلم عليه من الماء،ودعا له،ثم قال:إدعى فاطمة،قالت:فجاء ت تعثر من الحياء،فقال لها رسول الله صلى الله عليه وسلم:أسكتى،فقد أنكحتك أحب أهل بيتى.

तर्जुमा: इमाम हाकिम رحمه الله ने 'मुस्तदरक' में अपनी सनद से रिवायत नक़्ल की है कि अस्मा बिंते उमैस رضي الله عنها फरमाती हैं: मैं फ़ातिमा बिंते रसूल ﷺ की शब ए ज़ीफ़ाफ में मौजूद थीं। जब हम ने सुबह की तो **रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और फरमाया: "ऐ उम्मे ऐमन رضي الله عنها, मेरे भाई को बुला कर मेरे पास लाओ।" उन्हों ने कहा: "क्या वह आप के भाई हैं और आप ने उन का निकाह अपनी बेटी से कर दिया है ?" आप ﷺ ने जवाब दिया : "हाँ, उम्मे ऐमन رضي الله عنها, मैं ने ऐसा ही किया है।"** फिर अ़ली رضي الله عنه आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए। नबी ﷺ ने उन पर पानी छिडका और उन के लिए दुआएँ कीं। फिर आप ﷺ ने फ़रमाया : "फ़ातिमा رضي الله عنها को बुलाओ", कहती हैं कि फ़ातिमा رضي الله عنها शर्माते हुए तशरीफ़ लाइं। उन को मुख़ातिब कर के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : **"बेटी इत्मिनान रखो, मैं ने तुम्हारा निकाह अपने घराने के उस शख़्स से किया है जो मुझे सब से ज़ियादा महबूब है।"** (मुस्तदरक हाकिम 3/159)

(٧) وفی روایة ابن سعد:فجاء رسول الله صلی الله علیه وسلم ، فاستفتح ، فخرجت إلیه أم أیمن، فقال:أین أخی ؟ قالت:وکیف یکون أخوک ، وقد أنکحته ابنتک،قال ، فإنه کذلک.

तर्जुमा: इब्ने साद की रिवायत में है: रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और दरवाज़ा खोलने को कहा। उम्मे ऐमन رضي الله عنها बाहर निकलीं। आप ने उन से पूछा: मेरा भाई कहाँ है? उम्मे ऐमन رضي الله عنها ने अर्ज़ किया: "क्या वह आप ﷺ के भाई हैं और आप ने उन का निकाह अपनी बेटी से कर दिया है ? आप ﷺ ने जवाब दिया: "हाँ, उम्मे ऐमन, ऐसा ही है।" (तबक़ाते कुबरा 14/8)

(٨) وفی روایة أخری:فجاء رسول الله حتی وقف بالباب وسلم ، فاستأذن فأذن له ، فقال:أین أخی ؟ فقالت أم أیمن:بأبی أنت وأمی یا رسول الله ، من أخوک ؟ قال:علی بن أبی طالب ، قالت:وکیف یکون أخاک ، وقد زوجته ابنتک ؟ قال:هو ذاک یا أم أیمن.

तर्जुमा: एक दूसरी रिवायत में है: रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए, दरवाजे पर खड़े हो कर सलाम किया और अंदर आने की इजाज़त तलब की। आप ﷺको इजाज़त दी गई। **अंदर दाख़िल हो कर आप ﷺने पूछा: मेरा भाई कहाँ है ? उम्मे अयमन ने अर्ज़ किया : "मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान, यहाँ आप का भाई कौन है ?" आप ﷺ ने फ़रमाया : "अ़ली बिन अबी तालिब رضي الله عنه" उन्हों ने अर्ज़ किया : "वह आप ﷺ के भाई क्यूँ कर हो सकते हैं जब कि आप ने उन से अपनी बेटी का निकाह किया है ?" आप ﷺ ने फ़रमाया : "उम्मे अयमन, वह मेरे भाई ही हैं ।"**

(तबक़ाते कुबरा 15/8)

(٩) وروی النسائی فی الخصائص بسنده عن ابن عباس قال:لما زوج رسول الله صلی الله علیه وسلم،فاطمة رضی الله عنها من علی رضی الله عنه، کان فیما أهدی معها سریر مشروط،ووسادة من

أديم،حشوها ليف ، وقربة ماء،وجاء ببطحاء من الرمل فبسطوه في البيت،وقال لعلي رضي الله عنه:إذا أتيت بها فلا تقربها حتى آتيك،فجاء رسول الله صلى الله عليه وسلم،فدق الباب،فخرجت أم أيمن،فقال:أين أخي، قالت:وكيف يكون أخاك، وقد زوجته ابنتك، قال:إنه أخي.

तर्जुमा: "इमाम निसाई ने "ख़साइस" में अपनी सनद से इब्ने अब्बास से हदीष नक़ल की है, वह बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह ने फ़ातिमा का निकाह अ़ली से किया तो हदिये में उन्हें एक बुनी हुई चारपाई, चमड़े का एक तकिया जिस में पत्ती भरी थी, और पानी का एक छागल दिया था। बतहा से रेत ला कर उन के घर में बिछा दी गई थी। आप ने अ़ली से कहा: जब तुम फ़ातिमा के पास जाओ तो मेरे आने तक उन के क़रीब न जाना। फिर रसूलुल्लाह तशरीफ़ लाए, दरवाज़ा खटखटाया, उम्मे ऐमन बाहर निकलीं। **आप ने पूछा: "मेरे भाई कहाँ हैं?" उम्मे ऐमन ने पूछा: "वह आप के भाई कैसे हो सकते हैं जब कि आप ने उन को अपनी बेटी निकाह में दी है ?" आप ने फ़रमाया : "वह मेरे भाई हैं।"** (ख़साइस अन्निसाई सफ़हा : 71-72)

(١٠) وروى الترمذي في صحيحه عن ابن عمر قال:آخى رسول الله صلى الله عليه وسلم بين أصحابه ، فجاء علي تدمع عيناه فقال:يا رسول الله آخيت بين أصحابك ، ولم تواخ بيني وبين أحد ، فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم:أنت أخي في الدنيا والآخرة.

तर्जुमा: "इमाम तिरमिज़ी ने अपनी सहीह में सय्यिदिना इब्ने उमर से रिवायत नक़ल की है, वह बयान करते हैं: रसूलुल्लाह ने अपने अस्हाब के दरमियान बाहमी भाई चारा कराया तो अ़ली रोते हुए आए और कहा: "अल्लाह के रसूल! आप ने अपने अस्हाब के दरमियान भाई चारा कराया है और मेरी भाई चारगी किसी से नहीं कराई ?" तो **रसूलुल्लाह ने उनसे फरमाया: "तुम मेरे भाई हो दुनिया और आख़िरत दोनों में ।"** (सहीह अल तिरमिज़ी; 2/299)

(١١) وروى ابن ماجة في صحيحه بسنده عن عباد بن عبد الله عن علي عليه السلام قال قال علي:أنا عبد الله وأخو رسوله ، وأنا الصديق الأكبر ، لا يقولها بعدى إلا كذاب ، صليت قبل الناس بسبع سنين .

तर्जुमा : इब्ने माजा ने अपनी सुनन में अपनी सनद से इबाद बिन अब्दुल्लाह की हदीष नक़ल की है की **सैयदना अ़ली फरमाते हैं कि "मैं अल्लाह का बंदा, उसके रसूल का भाई और मैं ही सिद्दिके अकबर हूँ, इस तरह की बात मेरे बाद कोई झूठा ही कह सकता है, मैंने आम लोगों से सात साल कब्ल ही नमाज़ पढ़ी है ।"** (सहीह इब्ने माजा,सफ़हा:12)

इस हदीष को इमाम हाकिम ने अपनी मुस्तदरक (111/3) में, इमाम तबरी ने अपनी तारीख़ (56/2) में, निसाई ने अपनी ख़साइस (सफ़हा:3,18) में, मुतक्की ने 'कंजुल आमाल' (6/394) में और मुहिब्बे तबरी ने 'रियाज़ुन्नाज़िरा' (2/155) में रिवायत किया है ।

इमाम अहमद ने 'फजाईल' में अपनी सनद से ज़ैद बिन अरकम से रिवायत बयान की है, वो कहते है :

(١٢) دخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم مسجده فذكر قصة مؤاخاة رسول الله صلى الله عليه وسلم بين أصحابه،فقال علي،يعني للنبي صلى الله عليه وسلم:لقد ذهبت روحي،وانقطع ظهري،حين رأيتك فعلت بأصحابك ما فعلت غيري،إن كان هذا من سخط علي، فلك العتبى والكرامة، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم:والذى بعثني بالحق ، ما أخرتك إلا لنفسي فأنت مني بمنزلة هارون من موسى ، إلا أنه لا نبي بعدى ، وأنت أخي ووارثي قال:وما أرث منك يا رسول الله ؟ قال:ما ورث الأنبياء قبلي ، قال:وما ورث الأنبياء قبلك ؟ قال: كتاب الله وسنة نبيهم ، وأنت معي في قصري في

الـجنة ، مـع فـاطمة ابنتي ، وأنت أخي ورفيقي ، ثم تلا رسول الله صلى الله عليه وسلم: ﴿إخوانا على سرر متقابلين﴾ ، المتحابون في الله ينظر بعضهم إلى بعض.

तर्जुमा: (मैं मस्जिदे नबवी में रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ,फिर उन्होने उस वाक़ेआ का ज़िक्र किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारे का रिश्ता पुस्तवार कराया। ये देख अ़ली رضي الله عنه ने नबी अकरम ﷺ से अर्ज़ किया: मेरी तो जान ही निकल गयी और पीठ दोहरी हो गयी जब मैंने देखा कि आप ﷺ ने मुझे छोड़ कर अपने साथियों के दरमियान मुवाख़ात का रिश्ता क़ायम कराया, अगर ये सब कुछ अ़ली رضي الله عنه से नाराजगी के सबब हुआ है तो आप ﷺ ही के लिए मेरा सारा तोशा और बुज़ुर्गी व इज्ज़त है।" ये सुन कर **रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : "क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे दीने हक़ के साथ भेजा है, मैंने तुम्हें मुअख़्ख़िर सिर्फ अपने लिए किया है, मेरी नज़र में तुम्हारा मक़ाम वही है जो मूसा عليه السلام की नज़र में हारून عليه السلام का था, हाँ मगर मेरे बाद कोई नबी न होगा, तुम मेरे भाई और वारिस हो।** रावी का बयान है कि अ़ली رضي الله عنه ने पूछा: ए अल्लाह के रसूल ﷺ! मैं आपसे किस चीज़ का वारिस हुंगा? आप ﷺ ने फरमाया : "उसका जिसका वारिस अंबिया मुझसे पहले बनाते रहे हैं।" मैंने पूछा : "आप ﷺ से पहले अंबिया दूसरों को किस चीज़ का वारिस बनाते रहे हैं ?" फ़रमाया : अल्लाह عز وجل की किताब और उनके नबी की सुन्नत, तुम मेरे साथ जन्नत में मेरे महल में होंगे, मेरी बेटी फातिमा رضي الله عنها के साथ, तुम मेरे भाई और रफीक हो फिर नबीए अकरम ﷺ ने कुरआन की इस आयत की तिलावत की के जन्नत में सब भाई भाई होंगे और एक दूसरे के सामने बैठे होंगे। अल्लाह के लिए मुहब्बत करने वाले एक दूसरे को देख रहे होंगे।"

(फजाइलुस्सहाबा - 6392/638)

(١٣) وروى الإمام أحمد في الفضائل بسنده عن قتادة عن سعيد بن المسيب ، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم آخى بين أصحابه ، فآخى بين أبي بكر وعمر وقال لعلي: أنت أخي ، وأنا أخوك.

तर्जुमा: (इमाम अहमद ने फ़ज़ाइल में अपनी सनद से कतादा से रिवायत नक़्ल की है, वो सईद बिन मुसय्यब से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने अपने सहाबा के दरमियान मुआख़ात कराई और अबू बक्र व उमर के दरमियान भाई चारे का रिश्ता क़ायम किया और फिर **अ़ली से फरमाया: "तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूँ।"** **(फजाइलुस्सहाबा, 2/597-598)**

(١٤) وفي رواية للإمام أحمد بسنده عن عمر بن عبد الله عن أبيه عن جده ، أن النبي صلى الله عليه وسلم ،آخى بين الناس، وترك عليا،حتى بقي آخرهم،لا يرى له أخا ،فقال يا رسول الله آخيت بين الناس وتركتني ، قال:ولم تراني تركتك،إنما تركتك لنفسي،أنت أخي،وأنا أخوك، فإن ذاكرك أحد ، فقل:أنا عبد الله وأخو رسوله،لا يدعيها بعدي إلا كذاب.

तर्जुमा: इमाम अहमद ने अपनी सनद से उमर बिन अब्दुल्लाह अन अबिया अन जददह ये रिवायत नक़्ल की है कि नबीए अकरम ने लोगों के दरमियान भाई चारे का रिश्ता क़ायम कराया लेकिन अ़ली को छोड़ दिया, आख़िर में सिर्फ वही बचे और कोई उनका भाई नज़र नहीं आ रहा था। उन्होने अर्ज़ किया: ए अल्लाह के रसूल ! आप ने सब लोगों के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता बना दिया लेकिन मुझे छोड़ दिया आप ने फरमाया : **"तुमने ये कैसे सोच लिया कि मैंने तुम्हें छोड़ दिया है, मैंने तुम्हें अपने लिए छोड़ दिया है, तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूँ, अगर तुमसे कोई ये बात कहे तो तुम उसे जवाब में कहना कि मैं अल्लाह का बंदा हूँ, इसके रसूल का भाई हूँ, मेरे बाद इस तरह की निस्बत का दावा कोई झूठा ही कर सकता है।"** **(फजाइलुस्सहाबा, 2/617)**

(١٥) وروى الإمام أحمد في المسند بسنده عن ربيعة بن ناجذ عن على عليه السلام قال: جمع رسول الله صلى الله عليه وسلم أو دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم بنى عبد المطلب، فيهم رهط كلهم يأكل الجذعة، ويشرب الفرق، قال: فصنع لهم مدا من طعام، فأكلوا حتى شبعوا، قال: وبقى الطعام كأنه لم يمس أو لم يشرب فقال: يا بنى عبد المطلب إنى بعثت لكم خاصة، وإلى الناس عامة، وقد رأيتم من هذه الآية ما رأيتم، فأيكم يبايعنى على أن يكون أخى وصاحبى؟ قال: فلم يقم إليه أحد، قال: فقمت إليه وكنت أصغر القوم قال: فقال: إجلس ثلاث مرات، كل ذلك أقوم إليه فيقول لى: إجلس، حتى كان فى الثالثة ضرب بيده على يدى وقال: أنت أخى.

तर्जुमा: इमाम अहमद ने अपनी 'मुस्नद' में अपनी सनद से रबीआ बिन नाजीज से रिवायत नक़ल की है कि अ़ली ने फरमाया : "रसूलुल्लाह ने बनू अब्दुल मुत्तलिब को जमा किया या उनको दावत दी, इस में ऐसी जमाअत भी थी जो मुकम्मल एक जज़आ खा सकती है और पूरा फ़र्क पी सकती थी ।" अ़ली कहते हैं कि उनके लिए खाना तय्यार कराया, उन्होंने जमा हो कर शिकम सैर हो कर खाना खाया, अ़ली ने बयान किया कि खाना फिर भी बच गया, ऐसा लगता था की किसी ने खाया पिया ही नहीं, खाने के बाद रसूलुल्लाह ने फरमाया : **"ए बनू मुत्तलिब ! मैं तुम्हारी तरफ बतौरे खास मबऊस किया गया हूँ, इस आयत में तुमने वो हुक्म देख लिया जो इसमे मौजूद है, लिहाजा तुम में से कौन मुझसे बैत करेगा कि मेरा भाई बने और मेरा साथ दे । अ़ली कहते हैं की मैं खड़ा हुआ और मैं जमाअत में सबसे छोटा था। आप ने मुझे बैठने को कहा । यही सवाल आपने तीन बार किया और तीनों बार मैं खड़ा हुआ, हर बार आप ने मुझे बैठने को कहा । तीसरी बार में आप ने अपना हाथ मेरे हाथ में दिया और कहा: तुम मेरे भाई हो ।"** (अल मुसनद 1/159)

इस रिवायत का ज़िक्र हैसमी ने “मजमाउल ज़वाइद” (8/302) में किया है और लिखा है कि इसके रिजाल सिक़्क़ा हैं, इमाम तबरी ने अपनी तारीख़ (2/63) में किया है और इसमे ये इजाफा है कि **“अ़ली मेरे भाई, मेरे साथी और मेरे वारिस हैं ।”** मज़ीद इस रिवायत का ज़िक्र मुहिब्बे तबरी ने रियाजुन्नाज़िरा (2/167) में किया है, ईमाम निसाई ने “ख़साइस” (सफ़हा:18) में किया है और मुतक्की ने “कंजुल आमाल” (6/408) में किया है ।

(١٦) وروى الإمام أحمد فى المسند بسنده عن ابن عباس قال: لما خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم من مكة ، خرج على بابنة حمزة ، فاختصم فيها على وجعفر وزيد إلى النبى صلى الله عليه وسلم ، فقال على :ابنة عمى ، وأنا أخرجتها ،وقال جعفر:ابنة عمى ، وخالتها عندى ، وقال زيد:ابنة أخى -وكان زيد مواخيا لحمزة ، آخى بينهما رسول الله صلى الله عليه وسلم -فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لزيد:أنت مولاى ومولاها ، وقال لعلى:أنت أخى وصاحبى ، وقال لجعفر:أشبهت خلقى وخلقى ، وهى إلى خالتها.

तर्जुमा: “इमाम अहमद ने अपनी ‘मुसनद’ में अपनी सनद से इब्ने अब्बास से रिवायत नक़्ल की है, वो बयान करते हैं की फतहे मक्का के बाद जब रसूलुल्लाह मक्का से बाहर निकले तो अ़ली अपने साथ हमज़ा की बेटी को भी ले आए। हमज़ा की बेटी के बारे में अ़ली, जाफ़र और ज़ैद ने इख़्तेलाफ़ किया और तीनों ने अपना मुक़दमा नबीए अकरम की ख़िदमत में पेश किया। अ़ली ने कहा: “ये मेरे चचा की बेटी है और मैं उसे लेकर आया हूँ,” जाफ़र ने कहा: “ये मेरे चचा की बेटी है और इसकी ख़ाला मेरी ज़ौजियत में है,” ज़ैद ने कहा: “ये मेरे भाई की बेटी है,” ज़ैद और हमज़ा के दरमियान मुआख़ात थी, रसूलुल्लाह ने दोनों के दरमियान भाई चारा का रिश्ता क़ायम किया था, रसूलुलुल्लाह ने ज़ैद से कहा: “तुम मेरे मौला हो और इस

बच्ची के भी मौला हो," अ़ली ﷺ से कहा: **"तुम मेरे भाई और मेरे साथी हो,"** जाफ़र ﷺ से फ़रमाया : "तुम अख़्लाक़ और जिसमानी साख़्त में मुझसे मुशाबेहत रखते हो, ये बच्ची अपनी ख़ाला के पास रहेगी ।"

(मुस्नद अहमद इब्ने हम्बल 1/230)

मुतक्की हिन्दी ने इस हदीष का मुख़्तसरन तज़किरा कंज़ुल आमाल में किया है और लिखा है कि इसकी तख़रीज इब्ने नज्जार ने की है ।

(कंज़ुल आमाल 6/391)

(١٧) وروى ابن سعد في طبقاته بسنده عن ابن عباس قال:إن عمارة بنت حمزة بن عبد المطلب -وأمها سلمى بنت عميس -كانت بمكة ، فلما قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم ، كلم على النبى فقال:علام نترك ابنة عمنا يتيمة بين ظهرى المشركين ؟فلم ينهه النبى صلى الله عليه وسلم ، عن إخراجها ، فتكلم زيد بن حارثة ،وكان وصى حمزة ، وكان النبى صلى الله عليه وسلم،آخى بينهما،حين آخى بين المهاجرين ، فقال:أنا أحق بها،ابنة أخى،فلما سمع بذلك جعفر بن أبى طالب قال :الخالة والدة،وأنا أحق بها ، لمكان خالتها عندى،أسماء بنت عميس ، فقال على:ألا أراكم تختصمون فى ابنة عمى ، وأنا أخرجتها من بين أظهر المشركين ، ليس لكم إليها نسب دونى ، وأنا أحق بها منكم ، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم:أنا أحكم بينكم ، أما أنت يا زيد ، فمولى الله ومولى رسوله ، وأما أنت يا على فأخى وصاحبى ، وأما أنت يا جعفر فشبيه خلقى وخلقى ، وأنت يا جعفر أولى بها ، تحتك خالتها ، ولا تنكح المرأة على خالتها ، ولا عمتها، فقضى بها لجعفر.

तर्जुमा: इब्ने साद ने अपनी "तबक़ात" में अपनी सनद से इब्ने अब्बास से रिवायत बयान की है, वो कहते हैं कि अम्मारा बिन्ते हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब जिनकी वालिदा का नाम सलमा बिन्ते उमैस था, मक्का में थीं, जब रसूलुल्लाह मक्का तशरीफ़ लाये तो अ़ली ने उनके सिलसिले में नबीए अकरम से बात की और कहा: हम कब तक अपने चचा की बेटी को मुशरिकीन के दरमियान यतीमी की हालत में छोड़े रहेंगे ? नबीए अकरम ने अ़ली को उनको साथ लाने से माना नहीं किया। फिर उस बच्ची के ताअल्लूक़ से ज़ैद बिन हारिसा ने नबीए अकरम से बात की जो हमज़ा के वासीअ थे, नबीए अकरम ने जिस वक़्त मुहाजिरीन के दरमियान अख़ुव्वत कराई थी, उस वक़्त आपने हमज़ा और ज़ैद के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम किया था। इस रिश्ते से उन्होने कहा: "मैं इस बच्ची की हज़ानत का सबसे ज़्यादा हक़दार हूँ, ये मेरे भाई की बेटी है।" जब इस बात की ख़बर जाफ़र बिन अबी तालिब को मिली तो उन्होने कहा: "ख़ाला माँ के दर्जे में है, मैं इसका ज़्यादा हक़दार हूँ क्यूँ कि इसकी ख़ाला "असमाँ बिन्ते उमैस" मेरी ज़ौजियत में हैं।" अ़ली ने कहा: "क्या बात है तुम लोग मेरे चचा की बेटी के सिलसिले में झगड़ा कर रहे हो। मुश्रिकीन के दरमियान से इसे मैं निकाल कर लाया हूँ, मेरे जैसा तुम में से किसी का इससे नसबी रिश्ता नहीं है, मैं तुम लोगों से जियादा इसका हक़दार हूँ। "इस इख़्तेलाफ़ के सिलसिले में नबीए अकरम ने फरमाया : "तुम्हारे दरमियान फैसला मैं करूंगा।" ज़ैद का जहां तक सवाल है तो वो अल्लाह और उसके रसूल के दोस्त हैं, और हाँ अ़ली तुम मेरे भाई और साथी हो लेकिन जाफ़र तुम अख़्लाक़ व किरदार और जिसमानी साख़्त में मुझसे मुशाबिहत रखते हो, जाफ़र तुम इस बच्ची के ज़ियादा हक़दार हो क्यूँ कि इसकी ख़ाला तुम्हारी ज़ौजियत में है और ख़ाला की मौजूदगी में उसकी भांजी से निकाह नहीं किया जा सकता और न फूफी की मौजूदगी में भतीजी से निकाह किया जा सकता है। इस तरह आपने फैसला जाफ़र बिन अबी तालिब के हक़ में दिया।"

(अल तब्क़ातुलकुबरा लि इब्ने साद 8/114)

(۱۸) وروی ابن سعد فی طبقاته بسنده عن محمد بن عمر بن علی عن أبیه قال: لما قدم رسول الله صلی الله علیه وسلم آخی بین المهاجرین بعضهم ببعض، وآخی بین المهاجرین والأنصار، فلم تکن مؤاخاة إلا قبل بدر ، آخی بینهم علی الحق والمواساة، فآخی رسول الله صلی الله علیه وسلم ، بینه وبین علی بن أبی طالب.

तर्जुमा: इब्ने साद ﵀ ने अपनी तबक़ात में अपनी सनद से मुहम्मद बिन उमर बिन अ़ली अन अबिया से रिवायत बयान की है, वह कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरीन के मा बैन बाहम और मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान मुआख़ात कराया। इस से क़ब्ल गजवाए बद्र से पहले मुआख़ात हुई थी, उस वक़्त आप ﷺ ने उनके दरमियां हक़ का साथ देने और एक दूसरे का सहारा बनने के लिए मुआख़ात कराई थी। उस वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने और अ़ली बिन अबी तालिब ﵁ के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम किया था। (अल तब्क़ातुल कुबरा लि इब्ने साद 3/13-14)

(۱۹) وفی روایة عن عبد الله بن محمد بن عمر بن علی عن أبیه ، أن النبی صلی الله علیه وسلم ، حین آخی بین أصحابه ، وضع یده علی منکب علی ، ثم قال: أنت أخی ، ترثنی وأرثک.

तर्जुमा: एक दूसरी रिवायत में है कि अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उमर बिन अ़ली अन अबिया ने बयान किया कि नबीए अकरम ﷺ ने जिस वक़्त अपने असहाब के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम किया, आप ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक अ़ली ﵁ के कंधे पर रखा और फिर फ़रमाया : **"तुम मेरे भाई हो, मेरे वारिस होगे और मैं तुम्हारा वारिस हुंगा।"** (अल तब्कातुल कुबरा लि इब्ने साद 3/4)

(۲۰) وروی السیوطی فی "الدر المنثور" فی ذیل تفسیر قوله تعالی: ﴿إن الذین آمنوا وهاجروا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فی سبیل

الله ﴾، قال :وأخرج ابن مردويه عن ابن عباس قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم آخى بين المسلمين من المهاجرين والأنصار ، فآخى بين حمزة بن عبد المطلب وبين زيد بن حارثة ، وبين عمر بن الخطاب ومعاذ بن عفراء ، وبين الزبير بن العوام وعبد الله بن مسعود ، وبين أبي بكر وطلحة بن عبيد الله ، وبين عبد الرحمن بن عوف وسعد بن الربيع ، وقال لسائر أصحابه:تآخوا ، وهذا أخي يعني علي بن أبي طالب .

तर्जुमा: "इमाम सुयूती ने अपनी तफ़सीर "दुर्रे मंसूर" में कुरआन की आयात : " ﴿ إن الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله ﴾ " की तफ़सीर के ज़ैल में लिखा है कि इब्ने मर्दविया ने इब्ने अब्बास से रिवायत नक़ल की है कि रसूलुल्लाह मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान रिश्ताए अख़ुव्वत क़ायम कर रहे थे, उस वक़्त आप ने हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब और ज़ैद बिन हारिसा, उमर बिन ख़त्ताब और मआज़ बिन अफ़रा, ज़ुबैर बिन अवाम और अब्दुल्लाह बिन मसूद, अबू बक्र और तल्हा बिन उबैदुल्लाह और अब्दुर्रहमान बिन औफ और साद बिन रबीअ के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम किया और फिर तमाम असहाब को मुख़ातिब कर के फ़रमाया : **"तुम सब आपस में एक दूसरे के भाई हो और यह या'नि अ़ली बिन अबी तालिब मेरे भाई हैं ।"**

(٢١) وروى السيوطي في الدر المنثور في ذيل تفسير قوله تعالى: ﴿قال رب اشرح لي صدري﴾، قال: وأخرج السلفي في الطيوريات عن الإمام أبي جعفر محمد الباقر بن علي عليهما السلام قال: لما نزلت: ﴿واجعل لي وزيرا من أهلي ، هارون أخي ، أشدد به أزري﴾، كان رسول الله صلى الله عليه وسلم على جبل ، ثم دعا ربه: اللهم اشدد أزري بأخي علي ، فأجابه إلي ذلك .

तर्जुमा: "इमाम सुयूती ने अपनी तफ़सीर "दुर्रे मंसूर" में अल्लाह के इरशाद: "﴿قال رب اشرح لی صدری﴾" के ज़ैल में लिखा है कि सलफ़ी ने "तय्यूरियात" में इमाम अबू जाफ़र मुहम्मद बाकर बिन अ़ली से रिवायत नक़ल की है, वह बयान करते हैं कि जब यह आयात: "﴿واجعل لی وزیرا من أهلی ، هارون أخی، أشدد به أزری﴾" नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह उस वक़्त एक पहाड़ पर थे, आप ने उसी वक़्त अपने रब से दुआ की: ऐ अल्लाह मेरे बाज़ू मेरे भाई अ़ली के ज़रिये मज़बूत कर दे। अल्लाह ने आप की इस दुआ को शर्फ़े क़बूलियत आता की।"

(फ़ज़ाइलुलख़मसा मिनल सिहाहुस्सित्ता मुर्तज़ा अल हुसैनी अल फिरोज़ाबादी 3241/323)

(۲۲) وروی المتقی فی کنز العمال بسنده عن علی علیه السلام قال: آخی رسول الله صلی الله علیه وسلم،بین عمر وأبی بکر،وبین حمزة بن عبد المطلب وزید بن حارثة ، وبین عبد الله بن مسعود والزبیر بن العوام ، وبین عبد الرحمن بن عوف وسعد بن مالک ، وبینی وبین نفسه.

तर्जुमा: "मुत्तक़ी ने "कंज़ुल आमाल" में अपनी सनद से अ़ली से रिवायत नक़ल की है, वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह ने अबू बक्र और उमर के दरमियान, हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब और ज़ैद बिन हारिसा, और अब्दुल्लाह बिन मसऊद और ज़ुबैर बिन अवाम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और साद बिन मालिक और मेरे और अपने दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम फ़रमाया।"

(कंज़ुल आमाल 6/394)

(۲۳) وفی روایة أخری عن أبی رافع عن أبی تمام قال:لما آخی رسول الله صلی الله علیه وسلم بین الناس،آخی بینه وبین علی -قال أخرجه ابن عساکر.

तर्जुमा: एक दूसरी रिवायत जो अबू राफ़ेअ से है, वह अबू तमाम से रिवायत करते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने आम लोगों के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम किया तो आप ﷺ ने अपने और अ़ली رضي الله عنه के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम किया। इस रिवायत की तख़रीज इब्ने असाकिर رحمة الله عليه ने की है। (कंज़ुल आमाल 6/400)

इस हदीष को अल्लामा हैसमी رحمة الله عليه ने "मजमाउल ज़वाइद" (9/112) में रिवायत करने के बाद लिखा है कि इस की रिवायत तबरानी رحمة الله عليه ने की है और मनावी رحمة الله عليه ने इस का ज़िक्र 'फ़ैज़ुल कदीर' (4/355) में किया है और इसे तबरानी رحمة الله عليه ने 'औसत' में और देलमी رحمة الله عليه ने किया है।

(٢٤) وروی المتقی فی کنز العمال بسنده عن ابن عمر قال:سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم،فی حجة الوداع،وهو على ناقته، فضرب على منكب علي عليه السلام،وهو يقول:اللهم أشهد،اللهم قد بلغت،هذا أخي وابن عمي وصهری،وأبو ولدی،اللهم كب من عاداه في النار.

तर्जुमा: मुत्तक़ी हिन्दी رحمة الله عليه ने 'कंज़ुल आमाल' में अपनी सनद से इब्ने उमर رضي الله عنه से रिवायत नक़ल की है, वह बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को हज्जतुल विदा में देखा, आप ﷺ अपनी ऊटनी पर सवार थे, आप ﷺ ने उसी वक़्त अ़ली عليه السلام के कंधे पर हाथ मारा और यह फ़रमाया : **"ऐ अल्लाह ﷻ! तू गवाह रह, मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया है, यह मेरा भाई, मेरे चचा का बेटा, मेरा दामाद और मेरी औलाद का बाप है, जो इस से दुश्मनी करे, उसे मुंह के बल जहन्नम में दाल दे।"**

(कंज़ुल आमाल 3/61)

(٢٥) وروی ابن عبد البر فی الإستيعاب بسنده عن أبي الطفيل قال:لما احتضر عمر جعلها شورى بين علي وعثمان وطلحة والزبير وعبد الرحمن بن عوف وسعد ، فقال لهم علي:أنشدكم الله هل فيكم أحد آخى رسول الله صلى الله عليه وسلم بينه وبينه،إذ آخى بين

المسلمين ، غيرى،قالوا:اللهم لا.قال:وقد روينا من وجوه عن على رضى الله عنه أنه كان يقول:أنا عبد الله،وأخو رسول الله،لا يقولها أحد غيرى،إلا كذاب.قال أبو عمر:آخى رسول الله صلى الله عليه وسلم ، بين المهاجرين ، ثم آخى بين المهاجرين والأنصار ، وقال فى كل واحدة منهما لعلى:أنت أخى فى الدنيا والآخرة ، وآخى بينه وبين نفسه ، فلذلک كان هذا القول ، وما أشبهه ، من على رضى الله عنه .

तर्जुमा: इब्ने अब्दुल बर ने "इस्तियाब" में अपनी सनद से अबूल तुफ़ैल से रिवायत नक़ल की है, वह बयान करते हैं कि जब उमर की शहादत का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने अ़ली, उस्मान, तलहा, ज़ुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और साद पर मुश्तमिल एक मजलिसे शूरा बना दी। मजलिसे शूरा से अ़ली ने कहा: मैं तुम से अल्लाह की क़सम दिला कर पूछता हूँ कि क्या तुम में कोई ऐसा है कि जब रसूलुल्लाह मुसलमानों के दरमियान अख़ुव्वत का तआल्लुक क़ायम कर रहे थे, उस वक़्त मेरे अलावा कोई है जिस के और अपने दरमियान रसूलुल्लाह ने अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम किया हो ? लोगों ने जवाब दिया : अल्लाह की क़सम ! नही।

इब्ने अब्दुल बर मजीद लिखते हैं : मुख़्तलिफ़ सनदों से अ़ली से यह रिवायत मन्क़ूल है कि वह कहा करते थे कि मैं अल्लाह का बंदा हूँ, रसूलुल्लाह का भाई हूँ, मेरे अलावा यह दावा कोई झूठा ही कर सकता है।

अबू उमर कहते हैं: रसूलुल्लाह ने पहले मुहाजिरीन के दरमियान आपस में, फिर अन्सार और मुहाजिरीन के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता क़ायम कराया और **दोनों वाक़ियात में आप ने अ़ली से फ़रमाया : "तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो"**, इस तरह आप ने अपने और अ़ली के दरमियान अख़ुव्वत का रिश्ता बनाया। इसी लिए इस क़िस्म की बातें सय्यिदिना अ़ली मन्क़ूल और मरवी है।"

(अल इस्तियाब फी मारिफतिस्सहाबा 3/135)

(٢٦) وعـن ابـن عباس قال:قال رسول الله صلى الله عليه وسلم، لعلي :أنت أخي صاحبي .

तर्जुमा: इब्ने अब्बास ﷺ बयान करते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अ़ली ﷺ से फ़रमाया : **"तुम मेरे भाई और साथी हो ।"** (अल इस्तियाब फी मारिफतिस्सहाबा 3/135)

(٢٧) وروى ابـن الأثيـر فـي أسـد الـغابة بسنده عن عروة عن عبد الرحـمـن بـن عـويم بن ساعد الأنصارى ، أدرک رسول الله صلى الله عليه وسلم ، وقبل النبي صلى الله عليه وسلم أيضا ، قال:قال رسول الله صـلـى الـلـه عـليه وسلم:تواخوا في الله أخوين أخوين ، وأخذ بيد علي، وقال:هذا أخي -أخرجه أبو منده وأبو نعيم .

तर्जुमा: इब्ने असीर ﷺ ने "असदुल गाबा" में अपनी सनद से उरवा से हदीष नक़ल की है, वह रिवायत करते हैं अब्दुर्रहमान बिन अवीम बिन साअद अंसारी ﷺ से (जिन्हों ने नबी ﷺ का ज़माना पाया है और आप ﷺ को बोसा देने के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हैं), वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया : अल्लाह ﷺ की रज़ा के लिए तुम दो दो कर के बाहम भाई भाई बन जाओ, **फिर आप ﷺ ने अ़ली ﷺ का हाथ पकड़ा और फ़रमाया: "यह मेरे भाई हैं ।"** इस रिवायत की तख़रीज अबू मंदा ﷺ और अबू नुएम ﷺ ने की है । (असदुल गाबा 3/486)

(٢٨) وروى ابـن الأثير أيضا بسنده عن ابن عمر قال:آخى رسول الله صلى الله عليه وسلم ، بين أصحابه ، فجاء علي فقال:يا رسول الله ، آخيـت بيـن أصـحـابـک ، ولـم تـواخ بيني وبين أحد ، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم:أنت أخي في الدنيا والآخرة.

तर्जुमा: इब्ने असीर ﷺने ही अपनी सनद से सय्यिदिना इब्ने उमर ﷺ से यह रिवायत भी नक़ल की है, वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा क़ायम किया । यह देख कर अ़ली ﷺ आप की ख़िदमत में

तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया : "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! आप ने अपने असहाब के दरमियान मुआख़ात कराई लेकिन मेरा किसी से अख़ुव्वत का रिश्ता नहीं क़ायम किया। यह सुन कर **नबी ﷺ ने फ़रमाया : "तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो।"** (असदुल गाबा 4/109)

(۲۹) ورواه الحافظ أبو العلى فى تحفة الأحوذى .

तर्जुमा: इस हदीष को हाफ़िज़ अबुल अ़ली अब्दुर्रहमान अल मुबारक फ़ौरी رحمه الله ने भी "तोहफ़तुल अहूज़ी" में रिवायत किया है। (तोहफ़तुल अहूज़ी 10/222)

(۳۰) وروى الخطيب البغدادى فى تاريخه بسنده عن الأئمة محمد الباقر بن على زين العابدين بن الحسين عن أبيه عن على عليهم السلام قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم:يا على ، أنت أخى وصاحبى ، ورفيقى فى الجنة .

तर्जुमा: ख़तीब बग़दादी رحمه الله ने अपनी 'तारीख़' में अपनी सनद से आइम्माए अहले बैत मुहम्मद अल बाक़र बिन अ़ली ज़ैनुल आबिदीन बिनुल हुसैन अन अबिया अन अ़ली عليهم السلام यह हदीष नक़ल की है कि **रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "ऐ अ़ली رضي الله عنه ! तुम मेरे भाई और साथी हो और जन्नत में मेरे रफ़ीक़ हो।"**

(तारीख़े बग़दाद 12/268)

(۳۱) وفى كنوز الحقائق للمناوى:أما ترضى ، أنك أخى وأنا أخوك ؟ قاله النبى صلى الله عليه وسلم ، لعلى.

तर्जुमा: मनावी رحمه الله की "कनूज़ूल हक़ाइक़" में है : **नबीए अकरम ﷺ अ़ली رضي الله عنه से फ़रमाया : "क्या तुम इस बात से ख़ुश नहीं हो कि तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूँ।"** (कनूज़ूल हक़ायक़, सफ़हा: 27)

इस हदीष का ज़िक्र अल्लामा हैसमी رحمه الله ने "मजमाउल ज़वाइद" (9/131) में भी किया है।

(۳۲) وروی الحافظ أبو نعیم فی حلیته بسنده عن عطیة عن جابر قال :قال رسول الله صلی الله علیه وسلم:مکتوب علی باب الجنة ،لا إله إلا الله ، محمد رسول الله ، علی أخو رسول الله ، قبل أن یخلق السماوات والأرض بألفی عام.

तर्जुमा: हाफ़िज़ अबू नुएम ने "हिलयतुल औलिया" में अपनी सनद से अतिया की रिवायत नक़ल की है, वह रिवायत करते हैं जाबिर से, वह बयान करते हैं कि **रसूलुल्लाह ने फ़रमाया : "जन्नत के दरवाज़े पर आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ से एक हज़ार साल पहले से यह लिखा हुआ है : अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और अ़ली रसूलुल्लाह के भाई हैं ।"** **(हिलयतुल औलिया 7/256)**

इस हदीष को ख़तीब ने अपनी 'तारीख़' (7/387) में, मुत्तक़ी ने 'कंज़ुल आमाल' (6/159) में, मनावी ने फ़ैज़ुल कदीर (4/355) में, मुहिब्बे तबरी ने रियाज़ुन्नज़िरा (2/169) में किया है ।

(۳۳) وروی ابن حجر الهیثمی فی صواعقه:أخرج الدیلمی عن عائشة :أن النبی صلی الله علیه وسلم قال:خیر أخوتی علی ، وخیر أعمامی حمزة.

तर्जुमा: इब्ने हजर हैसमी ने 'सवाइक़' में और देलमी ने आयशा से रिवायत किया है कि **नबीए अकरम ने फ़रमाया : "मेरे सबसे बेहतरीन भाई अ़ली हैं, और मेरे सबसे बेहतरीन चचा हमज़ा हैं ।"**

(अल सवाइक़ुल मुहर्रिका सफ़हा: 192, फ़ैज़ुल कदीर 3/482, कंज़ुल आमाल 6/152)

(۳۴) وروی الهیثمی فی مجمع الزوائد عن علی علیه السلام قال:طلبنی رسول الله صلی الله علیه وسلم ، فوجدنی فی جدول نائما ، فقال:قم ما ألوم الناس یسمونک أبا تراب ، قال:فرآنی کأنی وجدت فی نفسی من ذلک ، فقال لی:والله لأرضینک:أنت أخی ، وأبو ولدی ،

تـقـاتل عن سنتي،وتبرء ذمتي ،من مات في عهدى،فهو في كنز الله،ومن مـات فـي عهـدک،فقد قضي نحبه،ومن مات يحبک بعد موتک،ختم الـلـه له بالأمن والإيمان،ما طلعت شمس أو غربت،ومن مات يبغضک مات ميتة جاهلية ،وحوسب بما عمل في الإسلام.

तर्जुमा: अल्लामा हैसमी ने "मजमाउल ज़वाइद" में अ़ली से रिवायत नक़ल की है, वह बयान करते हैं की रसूलुल्लाह ने मुझे तलब किया, आप ने मुझे एक दीवार के साए में सोते हुए पाया, आप ने फ़रमाया : उठ जाओ, अगर लोग तुम्हें अबू तुराब कहें तो मैं उन्हें मलामत नहीं करुंगा। अ़ली बयान करते हैं कि आप ने महसूस किया कि मुझे इस से कुछ रंज पहुंचा है तो आप ने मुझे कहा : **"अल्लाह की क़सम! मैं तुझ से राज़ी हूँ, तू मेरा भाई है मेरी औलाद का बाप है, मेरी सुन्नत पर जिहाद करेगा, मेरी ज़िम्मेदारियों को अदा करेगा, मेरे वादे पर जो मरा वह अल्लाह के ख़ज़ाने में होगा और जो तुझ से अहद के मुताबिक़ मरा, उस ने अपना फर्ज़ अदा कर दिया, और जो इस हाल में मरा कि वह तुम्हारी वफ़ात के बाद भी तुम से मुहब्बत करता था तो अल्लाह उसे हुस्ने ख़ातिमा की ने'मत से सरफ़राज़ करेगा और यह सिलसिला गर्दिशे लैल व निहार तक जारी रहेगा और जो इस हाल में मरा कि तुम से नफ़रत करता था तो उस की मौत जाहिलियत पर हुई और इस्लाम में रहते हुए जो अमल उस ने किया है, उस का उससे हिसाब लिया जाएगा।"**

(मजमाउल ज़वायद 9/121)

इब्ने हजर हैसमी ने इस हदीष का ज़िक्र 'सवाइक' (सफ़हा:195) में किया है और इसे मनसूब किया है अहमद की तरफ़ कि उन्हों ने मनाक़िब में इसे नक़ल किया है। और इस का ज़िक्र मुत्तक़ी ने कंज़ुल आमाल (6/404) में अबू याअ़ली से किया है और यह कहा है कि बू सीरी ने कहा है कि उस के रावी सिक़्क़ा हैं।

(٣٥) وفـي رواية :ألا أرضيک يا علي ؟ أنـت أخـي ووزيـري ، تقضي ديني ، وتنجز موعدی ، وتبرء ذمتي -وقال:أخرجه الطبرانی عن ابـن عـمر(كنز العمال 6/155)، وذكـره الشـنـقيطی فی كفاية الطالب ، وقال:أخرجه أحمد في المناقب .

तर्जुमा: एक और हदीष में है: **"सुनो ! ऐ अ़ली' ! तुम मेरे भाई और मेरे वज़ीर हो, तुम मेरा फर्ज़ अदा करोगे, मेरे वादे पूरे करोगे और मेरी जिम्मेदारियाँ अदा करोगे ।"** और यह कहा है कि इस हदीष को तबरानी ने इब्ने उमर से रिवायत किया है। (कंज़ुल आमाल 155/6) और इस हदीष का ज़िक्र शनक़ीती ने "किफ़ायतुल तालिब" में किया है और लिखा है कि इस हदीष को इमाम अहमद ने मनाक़िब में ज़िक्र किया है। **(किफ़ायतुल तालिब, सफ़हा: 34)**

(٣٦) وأخـرج ابـن حـجـر العسقلاني فی الإصابة بسنده عن ليلى الـغـفـارية قـالـت: كـنـت أغـزو مع النبي صلى الله عليه وسلم ، فأداوی الـجـرحـی ، وأقـوم علی المرضی ، فلما خرج علی إلی البصرة خرجت مـعـه ، فـلـما رأيت عائشة أتيتها فقلت:هل سمعت من رسول الله صلى الـلـه عـلـيـه وسـلـم ، فضيلة فی علی ، قالت:نعم ، دخل علی رسول الله صـلـى الـلـه عـلـيـه وسلم ، وهو معی ، وعليه جرد قطيفة ، فجلس بيننا ، فـقـلـت:أما وجدت مكانا هو أوسع لک من هذا ، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم:يا عائشة ، دعی لی أخی ، فإنه أول الناس إسلاما ، وآخر الناس بی عهدا ، وأول الناس لی لقيا يوم القيامة .

तर्जुमा: "इब्ने हजर असक़लानी ने अपनी किताब 'अल असाबा' में लैला गफ़्फ़ारिया से रिवायत नक़ल की है, वह कहती हैं कि मैं नबीए अकरम के साथ गज़्वात में जाया करती थी, वहाँ ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करती और मरीज़ों की तीमारदारी किया करती थी। जब अ़ली बसरा की तरफ़ निकले तो मैं उन के साथ

निकली, वहाँ जब मैंने उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا को देखा तो उन की ख़िदमत में हाज़िर हुई और उन से अर्ज़ किया : **“क्या नबीए अकरम ﷺ से आप ने अ़ली رضی اللہ عنہ की फ़ज़ीलत में कुछ सुना है?”** तो उन्हों ने जवाब दिया: हाँ सुना है। एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए, आप मेरे पास थे, आप पर एक चादर पड़ी थी, आप हमारे दरमियान बैठ गए। मैंने अर्ज़ किया: क्या आप को और ज़ियादा कुशादा जगह नहीं मिली। यह सुन कर **रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “ऐ आयशा رضی اللہ عنہا ! मेरे पास मेरे भाई को बुलाओ क्यूँ कि वही सब से पहले इस्लाम लाए, और मुझ से आख़री अहद उन ही का होगा और वही क़यामत के दिन सबसे पहले मुझ से मुलाक़ात करेंगे।”** (अल असाबा फी तमियज़ुस्सहाबा 4/402-403)

(۳۷) وروی عثـمـان بـن سعید عن عبد الله بن بکیر عن حکیم ین جبیر قال :خـطـب علی علیه السلم ، فقال فی أثناء خطبته :أنا عبد الله ، وأخـو رسـولـه ، لا یـقـولهـا أحـد قبـلی ولا بعدی،إلا کذب،ورثت نبی الرحمة ، ونکحت سیدة نساء هذه الأمة،وأنا خاتم الوصیین.

तर्जुमा: उस्मान बिन सईद ने अब्दुल्लाह बिन बकीर से रिवायत बयान की है, वह रिवायत करते हैं हकीम बिन जबीर से, वह बयान करते हैं कि **अ़ली عليه السلام ने एक बार ख़ुत्बा दिया और अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया : मैं अल्लाह ﷻ का बंदा हूँ, उस के रसूल ﷺ का भाई हूँ, यह दावा ना कोई मुझ से पहले कर सकता है और न मेरे बाद। अगर कोई ऐसा करता है तो वह झूठा है। मैं नबीए रहमत का वारिस हूँ, मैंने उस उम्मत की सरदार ख़ातून से निकाह किया है और मैं ख़ातिम अल वसीन हूँ।”**

(शरह नहजुल बलागा 2/287)

रिश्ताए मुआख़ात से इब्ने तैमिया का इन्कार और उन के नुकताए नज़र की तरदीद

इब्ने तैमिया ने मुहाजिरीन सहाबा के दरमियान नबीए अकरम ﷺ के रिश्ताए मुआखात क़ायम करने से इन्कार किया है और यह लिखा है कि :

"मुहाजिरीन का बाहमी रिश्ताए अख़ुव्वत और ख़ास तौर पर नबीए अकरम ﷺ और अ़ली बिन अबी तालिब ؓ के दरमियान मुआखात नहीं क़ायम की गई थी बल्कि यह मुआख़ात सिर्फ मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान हुई थी। मुहाजिरीन की बाहमी मुआख़ात का कोई मतलब नहीं है क्यूँ कि मुआख़ात एक दूसरे का सहारा बनने के लिए कराई गई थी और यह ज़रूरत सिर्फ मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान मुआख़ात कराने से पूरी हो सकती थी।" **(फ़तावा इब्ने तैमिया 93-92/35)**

इब्ने तैमिया की इस राय से इब्ने क़य्यीम और इब्ने कसीर ने भी इत्तेफाक़ किया है। बल्कि इब्ने क़य्यीम ने लिखा है :

"मुआख़ात का रिश्ता सिर्फ मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान क़ायम कराया गया था। मुहाजिरीन इस्लामी अख़ुव्वत, मक्की अख़ुव्वत और नसबी क़राबतदारी की वजह से इस क़िस्म की नई अख़ुव्वत से बे नियाज़ थे बर ख़िलाफ मुहाजिरीन और अन्सार के। अगर नबीए अकरम ﷺ ने मुहाजिरीन के दरमियान मुआख़ात कराई होती तो इस रिश्ते के लिए आप सिद्दीक़े अकबर ؓ को मुंतख़िब फ़रमाते न की अ़ली बिन अबी तालिब ؓ को।" **(ज़ाद अल मआद फी हदी ख़ैरुल इबाद 63-65/3)**

लेकिन इब्ने हजर असक़लानी ؒ ने इस राई की तरदीद की है जैसा के जर्क़ानी ؒ ने "शरह मवाहिबुल्लदनिया" में यह तफ़सीर दर्ज की है कि :

"यह तो नस को क़यास से रद्द करना हुआ। मुहाजिरीन के दरमियान मुआख़ात क़ायम करने की हिकमत यह थी कि उन में से बाज़ दूसरों के मुक़ाबले में दौलत और ख़ानदानी वजाहत में ताकतवर थे, इस लिए नबीए अकरम ﷺ ने आला और अदना के दरमियान यह रिश्ता क़ायम किया ताकि अदना को आला का सहारा मिल जाए। इसी से इस रिश्ताए मुआख़ात की भी हिकमत ज़ाहिर हो रही है जो आप ने अपने और अ़ली ؓ के दरमियान क़ायम की थी क्यूँ कि वह आप ही की ज़ाते

गिरामी थी जिस के हुक्म की तामील अ़ली ﷺ बाअसत से पहले भी किया करते थे और बाअसत के बाद भी ।” (सीरते हलबिया 2/181-182)

ख़ुद इमाम इब्ने क़य्यीम अल जौज़िया ने अपनी इसी किताब “ज़ाद अल मआद” में जिस में उन्हों ने मुहाजिरीन के दरमियान बाहमी मुआख़ात से इन्कार किया है, उमरतुल क़ज़ा वाले वाक़िया में इस मुआख़ात का इस्बात किया है और अपने कलम से लिखा है कि मक्का में मुहाजिरीन के दरमियान मुआख़ात हुई थी। हमज़ा की बेटी की हज़ानत के मसअले में ज़ैद बिन हारिसा ﷺ का यह कहना कि यह मेरे भाई की बेटी है, इस की वज़ाहत करते हुए इब्ने क़य्यीम लिखते हैं :

“इस से उन की मुराद उस मुआख़ात से है जो नबीए अकरम ﷺ उन के और हमज़ा ﷺ के दरमियान उस वक़्त कराई थी जब आप ने मुहाजिरीन के माबैन रिश्ताए मुआख़ात क़ायम किया था । आप ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान दो बार मुआख़ात कराई थी : एक मुआख़ात वह थी जो आप ﷺ ने हिजरत से पहले हक़ और मसावात के लिए मुहाजिरीन के दरमियान बाहमी मुआख़ात कराई थी । उस वक्त आप ﷺ ने अबू बक्र ﷺ व उमर ﷺ के दरमियान, हमज़ा ﷺ और ज़ैद बिन हारिसा ﷺ के दरमियान, उस्मान ﷺ और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ के दरमियान, ज़ुबैर ﷺ और अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ के दरमियान, उबैदा बिन हारिस ﷺ और बिलाल ﷺ के दरमियान, मुसअब बिन उमैर ﷺ और साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ के दरमियान, सईद बिन ज़ैद ﷺ और तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ के दरमियान, अबू उबैदा ﷺ और सालिम मौला हनीफ़ा ﷺ के दरमियान मुआख़ात कराई थी। दूसरी बार आप ﷺ ने मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान मदीना मुनव्वरा में सय्यिदिना अनस बिन मालिक ﷺ के घर में यह मुआख़ात कराई थी ।”

(ज़ाद अल मआद फी हदी ख़ैरुल इबाद 3/374, 377, 378)

शैख़ुल इस्लाम अज़्लुद्दीन बिन अब्दुल सलाम (577-660 हिजरी) ने मसअलाए मुआख़ात पर जिस अंदाज़ में बहस की है, इस से अंदाज़ा होता है कि इस वाक़ेआए मुआख़ात के दो बार वक़ूअ पज़ीर होने से कोई चीज़ मानेअ़ नहीं है: एक बार हिजरत से पहले मक्का मुकर्रमा में मुहाजिरीन के अपने दरमियान और दूसरी बार हिजरत के बाद मदीनाए मुनव्वरा में मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान। सही में है कि ज़ैद बिन

हारिसा ﷻ ने अमामा बिंते हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के बारे में कहा कि वह मेरे भाई की बेटी है और उस की वजह वह मुआख़ात थी जो हमज़ा ﷻ और ज़ैद बिन हारिसा ﷻ के दरमियान नबीए अकरम ﷺ कराई थी। इमाम हाकिम ﷻ ने इस का ज़िक्र "अकलील" में किया है और अबू साद शरफुद्दीन ﷻ ने "शरफ़ुल मुस्तफ़ा" में किया है। मजीद बरआं इमाम हाकिम ﷻ ने "मुस्तदरक" में और इब्ने अब्दुल बर ﷻ ने "अल इस्तियाब" में ज़िक्र किया है कि नबीए अकरम ﷺ ने इसी तरह जुबैर ﷻ और इब्नए मसऊद ﷻ के दरमियान मुआख़ात का रिश्ता क़ायम किया था।

(अल मुस्तदरक 1/580, अल इस्तियाब फी मारिफतुस्सहाबा 2/739)

खुलासाए बहस

(1)آخَى رَسولُ اللهِ مَن رَآنِى فِى المَنامِ بين أصحابِه ، فجاء علِيٌّ تَدْمَعُ عَيناهُ ، فقال:يا رسولَ اللهِ!آخَيتَ بين أصْحابِكَ ، ولَمْ تُؤَاخِ بينِى وبينَ أحَدٍ ، فقال له رسولُ اللهِ مَن رَآنِى فِى المَنامِ:أنتَ أخِى فى الدُّنيا والآخِرَةِ.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान बाहमी भाई चारा कराया तो अ़ली ؓ रोते हुए आए और कहा : "अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! आप ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा कराया है और मेरे भाई चारगी किसी से नहीं कराई ? तो **रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से फ़रमाया: तुम मेरे भाई हो दुनिया और आख़िरत दोनों में ।"**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ हैं और इसे इमाम तिरमिज़ी ؒ में अपनी सुनन (3720) में रिवायत किया है ।

(2)آخى رسولُ اللهِ صلَّى اللهُ عليه وسلَّمَ بين أصحابِه فجاء عليٌّ رضي اللهُ عنه وعيناه تدمعُ قال يا رسولَ اللهِ ما لي آخيتَ بين أصحابِك ولم تؤاخِ بيني وبين أحدٍ ؟ فقال له رسولُ اللهِ صلَّى اللهُ عليه وسلَّمَ أنت أخي في الدنيا والآخرةِ.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान मुआख़ात का रिश्ता क़ायम फ़रमाया तो अ़ली ؓ रोते हुए तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! मेरा क्या होगा, आप ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान रिश्ताए अख़ुव्वत क़ायम किया लेकिन मेरा किसी से अख़ुव्वत का रिश्ता नहीं क़ायम किया ? यह सुन कर **रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से फ़रमाया: "दुनिया और आख़िरत में तुम मेरे भाई हो ।"**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ हैं और इसे इमाम इब्ने अदी ﷺ ने अपनी "अल कामिल (2/418)" में रिवायत किया है ।

(3) آخى رسولُ اللهِ صلى الله عليه وسلم بين أصحابِهِ حتى بقِيَ عليٌّ فقال: أنتَأخي في الدنيا والآخرة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने साथियों के मा बैन भाई चारा कराया यहाँ तक कि अ़ली ﷺ बच गए तो **आप ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें दुनिया और आख़िरत में अपना भाई बनाता हूँ ।"**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ हैं और इसे इमाम इब्ने कैसरानी ﷺ ने अपनी किताब 'ज़ख़ीरतुल हुफ़्फ़ाज़ (1/190)' में रिवायत किया है ।

(4) آخى رسولُ اللهِ صلَّى اللهُ عليهِ وسلَّمَ بينَ أصحابِه فجاء عليٌّ تدمعُ عيناه فقال آخيتَ بينَ أصحابِك ولم تؤاخِ بينِي وبينَ أحدٍ؟ فقال رسولُ اللهِ صلَّى اللهُ عليهِ وسلَّمَ أنت أخي في الدنيا والآخرة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान बाहमी भाई चारा कराया तो अ़ली ﷺ रोते हुए आए और कहा: अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! आप ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा कराया है और मेरी भाई चारगी किसी से नहीं कराई? तो **रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से फ़रमाया: तुम मेरे भाई हो दुनिया और आख़िरत दोनों में ।"**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ हैं और इसे मुहम्मद मनावी ﷺ ने "तख़रीजे अहादीष अल मसाबीह (5/291)" में रिवायत किया है ।

(5) آخى رسولُ اللَّهِ صلَّى اللَّهُ عليهِ وسلَّمَ بينَ أصحابِهِ فجاءَ عليٌّ تدمَعُ عيناهُ فقالَ يا رسولَ اللَّهِ آخيتَ بينَ أصحابِكَ ولم تؤاخِ بيني

وبينَ أحدٍ فقالَ لهُ رسولُ اللّٰهِ صلَّى اللّٰهُ عليهِ وسلَّمَ أنتَ أخي في الدُّنيا والآخرةِ.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान बाहमी भाई चारा कराया तो अ़ली رضي الله عنه रोते हुए आए और कहा: अल्लाह عز وجل के रसूल ﷺ ! आप ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा कराया है और मेरी भाई चारगी किसी से नहीं कराई ? **तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से फ़रमाया : "तुम मेरे भाई हो दुनिया और आख़िरत दोनों में ।"**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما हैं और इसे इमाम मुबारक पूरी رحمه الله ने अपनी किताब: तुरफ़तुल अहूज़ी (9/232) में रिवायत किया है ।

(6) آخى رسولُ اللّٰهِ صلَّى اللّٰهُ عليهِ وسلَّمَ بينَ أصحابِهِ فجاءَ عليٌّ تدمعُ عيناهُ فقالَ يا رسولَ اللّٰهِ آخيتَ بينَ أصحابِكَ ولم تؤاخِ بيني وبينَ أحدٍ فقالَ لَهُ رسولُ اللّٰهِ صلَّى اللّٰهُ عليهِ وسلَّمَ أنتَ أخي في الدُّنيا والآخرةِ.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान बाहमी भाई चारा कराया तो अ़ली رضي الله عنه रोते हुए आए और कहा: अल्लाह عز وجل के रसूल ﷺ ! आप ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा कराया है और मेरी भाई चारगी किसी से नहीं कराई ? तो **रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से फ़रमाया : "तुम मेरे भाई हो दुनिया और आख़िरत दोनों में ।"**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما हैं और इसे अल्लामा अलबानी ने अपनी किताब: ज़इफुल तिरमिज़ी (3720) में रिवायत किया है ।

(7) أنَّ رسولَ اللّٰهِ صلَّى اللّٰهُ عليه وسلَّمَ قال لعليٍّ رضي اللّٰهُ عنه أنت أخي في الدنيا والآخرة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अ़ली رضي الله عنه से फ़रमाया : "दुनिया और आख़िरत दोनों मक़ामात पर तुम मेरे भाई हो।"

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه हैं और इसे इमाम इब्ने अदी رحمه الله ने 'अल कामिल (2/418)' में रिवायत किया है।

(8)أنَّ رسولَ اللهِ صلَّى اللهُ عليهِ وسلَّمَ قال لعليٍّ:أنت أَخِي فی الدنيا والآخرةِ.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अ़ली رضي الله عنه से फ़रमाया : "दुनिया और आख़िरत दोनों मक़ामात पर तुम मेरे भाई हो।"

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه हैं और इसे इमाम ज़हबी رحمه الله ने मीज़ानुल ए'तिदाल (1/421) में रिवायत किया है।

(9)لـمَّا آخا رسولُ اللهِ صلَّى اللهُ عليه وسلم بين أصحابِه جاءَ علىٌّ تدمعُ عيناهُ فقال له يا رسولَ اللهِ آخيتَ بين أصحابِك ولم تُواخِ بينى وبين أحدٍ قال:فسمعتُ رسولَ اللهِ صلَّى اللهُ عليه وسلم يقولُ له:أنت أخى فی الدنيا والآخرةِ.

तर्जुमा: जब रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा कराया तो आप के पास अ़ली رضي الله عنه रोते हुए आए और अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह عزوجل के रसूल ﷺ ! आप ﷺ ने अपने साथियों के दरमियान रिश्ताए मवाख़ात क़ायम कराया लेकिन मेरा किसी से भाई चारा नहीं कराया। रावी का बयान है कि मैंने इस मौक़े पर **रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना: अ़ली رضي الله عنه ! तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो।**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه हैं और इसे इमाम सफ़ारीनी हंबली رحمه الله ने लवाएहुल अनवारुल सनिया (2/29) में रिवायत किया है।

(10)يا عليُّ أنتَ أخي في الدُّنيا والآخرَةِ

तर्जुमा: "ऐ अ़ली ﵁ ! तुम दुनिया और आखिरत में मेरे भाई हो ।"

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर ﵁ हैं और इसे इमाम अलबानी ने सिलसिलतुल अहादीस अल ज़ईफ़ा (351) में रिवायत किया है ।

(11)أنتَ أخي في الدنيا والآخِرَةِ قالَهُ لِعَلِيٍّ.

तर्जुमा: आप ﷺ ने अ़ली ﵁ से कहा : "तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो ।"

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर ﵁ हैं इमाम अलबानी ने 'ज़ईफ़ुल जामेअ (1325)' में रिवायत किया है ।

(12)أنت(علي)أخي في الدُّنيا والآخرةِ.

तर्जुमा: "अ़ली ﵁ ! तुम दुनिया और आखिरत में मेरे भाई हो।"

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अनस बिन मालिक और उमर बिन ख़त्ताब ﵄ हैं और इसे इमाम इब्ने कसीर ﵀ ने 'अल बिदाया वल निहाया (7/348)' में रिवायत किया है ।

(13)آخى رسولُ اللهِ صلَّى اللهُ عليه وسلَّمَ بين أصحابه حتى بقيَ عليُّ بنُ أبي طالبٍ رضي اللهُ عنه وكان رجلًا شجاعًا ماضيًا على أمرِ اللهِ تعالى ذكره إذا أراد شيئًا فقال يا رسولَ اللهِ بقيتُ قال فأنت أخي في الدنيا والآخرةِ.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा कराया यहाँ तक कि सिर्फ अ़ली बिन अबी तालिब ﵁ बचे रहे और वह एक बहादुर इंसान थे, हुक्मे इलाही की तामील में सर गर्म रहा करते थे, जो इरादा कर लेते थे, अल्लाह ﷻ उसे पूरा फर्मा देता था। उन्हों ने आ कर अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! सिर्फ भाई चारा के रिश्ते से मैं बचा हुआ हूँ

तो आप ﷺ ने फ़रमाया : “तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो ।”

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما हैं और इसे इमाम इब्ने अदी رحمه الله ने अल कामिल (2/419)’ में रिवायत किया है ।

(14)آخى رسولُ اللهِ -صلَّى اللهُ عليهِ وسلَّمَ -بين أصحابه، فجاء ہ عليٌّ تدمَعُ عيناه، فقال: آخيتَ بينَ أصحابِک، ولم تؤاخِ بيني وبين أحدٍ ؟ !فأنت أخي في الدنيا والآخرة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा कराया। अ़ली رضي الله عنه आप के पास रोते हुए आए और अर्ज़ किया : “आप ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा करा दिया है लेकिन मेरा किसी से भाई चारा नहीं कराया ?” **आप ﷺ ने फ़रमाया: तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो ।”**

इस हदीष के रावी सय्यिदिना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما हैं और इसे इमाम अलबानी ने तख़रीजे मिश्कातुल मसाबीह (6039) में रिवायत किया है ।

Imam Jafar Sadiq Foundation

(Ahl-e-Sunnat)

Modasa, Aravalli, Gujarat (India)

Mo. 85110 21786